Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र-2 (खंड-ख)

गद्य साहित्य (भाग-1)

'उपन्यास और कहानी'

- गोदान
- दिव्या
- मैला आँचल
- महाभोज
- प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
- एक दुनिया : समानांतर

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHL07

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र–2 (खण्ड–ख)

गद्य साहित्य (भाग–1)

'उपन्यास और कहानी'

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web: www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP विषय सूची (Contents)

1. गोदान **7**

1.1 गोदान: संभावित प्रश्न 7

1.2 गोदान में पीढ़ी संघर्ष 8

1.3 "गोदान डूबते हुए सामंतवाद तथा उभरते हुए पूंजीवाद की कथा है"
अथवा "गोदान अपने युग का प्रतिबिंब है तथा आने वाले युग की प्रसव पीड़ा" 10

1.4 गोदान में आदर्शवाद बनाम यथार्थवाद 12

1.5 गोदान पर मार्क्सवाद का प्रभाव 14

1.6 गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है 16

1.7 गोदान: एक त्रासदी के रूप में 18

1.8 गोदान का नामकरण 20

1.9 समकालीन विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में गोदान का मूल्यांकन 21

1.10 गोदान का दोहरा कथानक या समानान्तर शिल्प 22

1.11 गोदान की भाषा शैली 25

1.12 गोदान की चरित्र योजना 27

1.13 गोदान में मालती और मेहता के संवादों से उभरने वाला जीवन-दर्शन 32

1.14 गोदान पर छायावाद युगीन नारीत्व परिकल्पना,
प्रेमदर्शन एवं रोमांटिक दृष्टिकोण का प्रभाव 33

1.15 व्याख्या अभ्यास-1: गोदान 35

1.16 व्याख्या अभ्यास-2 : गोदान 36

1.17 (व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण गद्यांश) 37

2. दिव्या **52**

2.1 दिव्या की संवेदना (मानववाद) 52

2.2 दिव्या उपन्यास की नारी चेतना 54

2.3 दिव्या पर मार्क्सवाद का प्रभाव 56

2.4 दिव्या में यशपाल का इतिहास बोध 58

2.5 इतिहास और कल्पना का समन्वय 59

2.6 दिव्या का शिल्प 61

2.7 दिव्या का चरित्र 64

2.8 यशपाल के प्रमुख उपन्यासों का परिचय 65

2.9 व्याख्या अभ्यास-1 (दिव्या) 66

2.10 व्याख्या अभ्यास-2 (दिव्या) 68

2.11 दिव्या (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण गद्यांश) 69

3. मैला आँचल **76**

3.1 मैला आँचल का संवेदना पक्ष 76

3.2 मैला आँचल: एक आंचलिक उपन्यास 81

3.3 मैला आँचल में अंचल का नायकत्व 83

3.4 आंचलिक उपन्यास परंपरा में मैला आँचल के सर्वश्रेष्ठ होने के आधार 84

3.5 मैला आँचल में आंचलिकता व राष्ट्रीयता 85

3.6 रेणु की राजनीतिक चेतना 86

3.7 मैला आँचल के नामकरण का औचित्य 87

3.8 मैला आँचल का शिल्प (गोदान से तुलना सहित) **88**

3.9 मैला आँचल की भाषा-शैली 90

3.10 व्याख्या अभ्यास-1: मैला आँचल 92

3.11 मैला आँचल (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण गद्यांश) 93

4. महाभोज **98**

4.1 संवेदना पक्ष 98

4.2 महाभोज के नामकरण की प्रासंगिकता 102

4.3 महाभोज की चरित्र योजना 103

4.4 महाभोज की भाषा शैली 105

4.5 महाभोज में नाटकीयता 106

4.6 मन्नू भंडारी के प्रमुख उपन्यास 107

4.7 व्याख्या अभ्यास: महाभोज 107

4.8 व्याख्या हेतु अन्य महत्त्वपूर्ण अंश तथा उनके प्रसंग 111

5. प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ **118**

5.1 बड़े घर की बेटी 118

5.2 बूढ़ी काकी 119

5.3 अलग्योझा 120

5.4 ईदगाह 121

5.5 सद्गति 123

5.6 पूस की रात 124

5.7 कफ़न 125

5.8 अन्य कहानियाँ 127

5.9 प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का प्रयोग 129

5.10 प्रेमचंद की कहानी कला 130

5.11 (व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण गद्यांश) 132

6. एक दुनिया : समानांतर **134**

6.1 परिचय 134

6.2 खोई हुई दिशायें (कमलेश्वर) 134

6.3 एक और ज़िन्दगी (मोहन राकेश) 136

6.4 यही सच है (मन्नू भण्डारी) 139

6.5 मछलियाँ (उषा प्रियंवदा) 141

6.6 टूटना (राजेन्द्र यादव) 143

6.7 अन्य प्रमुख कहानियाँ 145

6.8 'एक दुनिया: समानांतर' की भूमिका तथा नामकरण का विश्लेषण 150

6.9 (व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण गद्यांश) 152

अध्याय
1

गोदान

1.1 गोदानः संभावित प्रश्न

गोदान का युगीन यथार्थ

- "गोदान दो पीढ़ियों की टकराहट की कथा है जो मुख्यतः होरी और गोबर के द्वंद्व से व्यक्त हुई है।" इस कथन के आलोक में गोदान में विद्यमान पीढ़ी संघर्ष पर विचार करें।
- "गोदान अपने युग का प्रतिबिंब भी है और आने वाले युग की प्रसव पीड़ा भी"- विचार करें।
- "गोदान डूबते हुए सामंतवाद तथा उभरते हुए पूंजीवाद के संक्रमणकाल की कहानी है।" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में गोदान की समीक्षा करें।
- "प्रेमचंद ने गोदान में अपने समय के भारत की सभी समस्याओं को प्रस्तुत किया है, उनकी नज़र से कुछ भी ओझल नहीं हुआ है।" इस कथन के संदर्भ में गोदान में चित्रित समस्याओं पर चर्चा करें।

आदर्शवाद तथा यथार्थवाद

- "गोदान तक आते-आते प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद पूरी तरह यथार्थवाद में रूपांतरित हो गया है।" विचार करें।
- क्या गोदान सचमुच यथार्थवादी उपन्यास है या उसमें आदर्शवाद के अवशेष मौजूद हैं? प्रमाण सहित चर्चा करें।
- कुछ आलोचकों की राय है कि गोदान में व्यक्त होने वाला यथार्थवाद मार्क्सवाद से प्रेरित समाजवादी यथार्थवाद है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं। युक्तियुक्त (तार्किक) विवेचन करें।
- क्या गोदान पर मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई पड़ता है? यदि हाँ, तो कितना और किस रूप में?
- क्या गोदान में प्रेमचंद ने समाधान पक्ष के प्रति अपना नज़रिया प्रस्तुत किया है? सूक्ष्म निरीक्षण करें।

महाकाव्यात्मक उपन्यास

- गोदान को हिन्दी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा जाता है। इस संदर्भ में महाकाव्यात्मक उपन्यास की धारणा स्पष्ट करते हुए इस दावे पर विचार करें।
- क्या गोदान को 'राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधि उपन्यास' कहा जा सकता है? इस संबंध में आलोचकों द्वारा उठाई जाने वाली समस्याओं की चर्चा करते हुए गोदान का पक्ष प्रस्तुत करें।
- गोदान भारतीय 'ग्रामीण जीवन का महाकाव्य' है। विचार करें।
- गोदान 'भारतीय कृषक की त्रासद महागाथा' है। सिद्ध करें।
- गोदान भारतीय किसान के जीवन का महाकाव्य है। विचार करें।

त्रासदी

- त्रासदी की धारणा स्पष्ट करते हुए बताएँ कि क्या गोदान को 'ट्रेजिक उपन्यास' कहा जा सकता है? यदि हाँ, तो यह किसकी ट्रेजिडी है-होरी की, धनिया की, भारतीय किसान की या किसी और की?
- 'होरी की कहानी दुखों से भरी एक लंबी कहानी है किन्तु इसमें बीच-बीच में सुख के क्षण भी आते रहते हैं।' विचार करें।

- होरी प्रसन्न था। जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएं मानो उसके चरणों पर लौट रही थीं। कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है। हीरा की कृतज्ञता में उसके जीवन की सारी सफलता मूर्तिमान हो गयी है। उसके बखार में सौ-दो सौ मन अनाज भरा होता, उसकी हांड़ी में हजार-पांच सौ गड़े होते, पर उससे यह स्वर्ग का सुख क्या मिल सकता था?
- तो क्या यह मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं, जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।
- उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियां सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भांति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियां खेलता था और मां की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...
- जो कुछ अपने से नहीं बन पड़ा, उसी के दु:ख का नाम तो मोह है। पाले हुए कर्तव्य और निपटाये हुए कामों का क्या मोह? मोह तो उन अनाथों को छोड़ जाने में है, जिनके साथ हम अपना कर्तव्य न निभा सके, उन अधूरे मंसूबों में है, जिन्हें हम न पूरा कर सके।
- धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये और उसका भाव-सौंदर्य प्रतिपादित कीजिये। **(प्रत्येक लगभग 150 शब्दों में)**

   (a) ठाकुर ठीक ही तो कहते हैं, जब हाथ में रुपए आ जाएँ, गाय ले लेना। तीस रुपए का कागद लिखने पर कहीं पचीस रुपए मिलेंगे और तीन-चार साल तक न दिये जाएँ, तो पूरे सौ हो जाएँगे। पहले का अनुभव यही बता रहा था कि कर्ज़ वह मेहमान है, जो एक बार आ कर जाने का नाम नहीं लेता। **U.P.S.C. (Mains) 2016**

   (b) होरी प्रसन्न था। जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं। कौन कहता है जीवन-संग्राम में वह हारा है? यह उल्लास, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएँ हैं। उसकी छाती फूल उठी है। मुख पर तेज आ गया है। **U.P.S.C. (Mains) 2015**

   (c) जो कुछ अपने से नहीं बन पड़ा, उसी के दुख का नाम मोह है। पाले हुए कर्त्तव्य और निपटाये हुए कामों का क्या मोह! मोह तो उन अनाथों को छोड़ जाने में है, जिनके साथ हम अपना कर्त्तव्य न निभा सके; उन अध ूरे मंसूबों में है, जिन्हें हम पूरा न कर सके। **U.P.S.C. (Mains) 2014**

2. "चूंकि कृषक जीवन की समस्या उस समय के भारत की प्रमुख समस्या थी, इसलिये 'गोदान' में कृषक जीवन की ट्रेजडी का आख्यान मानों युगीन समस्याओं का प्रतिनिधि आख्यान है।" इस कथन की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2017**

3. प्रेमचंद ने हिन्दी में पहली बार गाँव और कृषक जीवन को अपने उपन्यास-लेखन का केंद्रीय विषय बनाया। 'गोदान' के माध्यम से प्रेमचंद की उक्त औपन्यासिक-दृष्टि की सांस्कृतिक समीक्षा प्रस्तुत कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2016**

4. यदि प्रेमचन्द 'गोदान' को उपन्यास के बदले नाटक के रूप में लिखते, तो आपकी दृष्टि में वे उसमें क्या छोड़ते और क्या जोड़ते? **U.P.S.C. (Mains) 2014**
5. हिन्दी उपन्यास की आधुनिकता की चर्चा 'गोदान' से शुरू होती है। देसी आधुनिकता के कौन-कौन से तत्त्व 'गोदान' को आधुनिक सिद्ध करते हैं? स्पष्ट कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2012**
6. "'गोदान' न केवल कृषक-जीवन का महाकाव्य है, अपितु समूचे युग की व्यथा-कथा है। इस कथन का पक्षापक्ष-विमर्श प्रस्तुत कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2011**
7. गोदान की बुनावट का विवेचन कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2009**
8. क्या आपको 'गोदान' पढ़ते हुए यह लगता है कि होरी का जीवन दु:ख का एक लम्बा नाटक है जिसमें सुख के भी कुछ दृश्य है? प्रमाण सहित उत्तर दीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2008**
9. औपन्यासिक कला की दृष्टि से 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2005**
10. 'गोदान' में प्रस्तुत गाँव और शहर की कथाओं के संबंध पर विचार करते हुए उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। **U.P.S.C. (Mains) 2001**

अध्याय
2

दिव्या

2.1 दिव्या की संवेदना (मानववाद)

यशपाल मानववादी रचनाकार हैं। मानववाद आधुनिक काल में विकसित हुई वह विचारधारा है जो ईश्वर और परलोक से संबंधित सभी विश्वासों को खारिज करते हुए मानव तथा मानव जगत को केंद्र में रखती है। मानववाद के कई रूप हैं। कुछ मानववादी जैसे एम.एन.राय और सार्त्र 'व्यक्ति' को अत्यधिक महत्त्व देते हैं जबकि कुछ मानववादी जैसे मार्क्स, नेहरू इत्यादि सामाजिक हित को केंद्र में रखते हुए व्यक्ति को स्वायत्त नहीं मानते। यशपाल चूँकि मार्क्सवादी विचारक हैं, इसलिये उन्होंने मानववाद के उस प्रारूप पर बल दिया है जिसमें सामाजिक वंचन, शोषण, दमन आदि के विरुद्ध प्रतिरोध दर्ज किया जाता है।

1. मानव की महिमा का चित्रण

मानववादी दृष्टिकोण के आधार पर यशपाल ने दिव्या में कई संकेत प्रस्तुत किये हैं। वे प्राक्कथन में ही मनुष्य की महिमा का दीर्घ चित्रण करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि समाज की हर समस्या स्वयं मनुष्यों द्वारा निर्मित है और यदि मनुष्य विद्रोह करने की ताकत रखता हो तो वह बड़े से बड़े ढाँचों को तोड़ सकता है। प्राक्कथन के कुछ वाक्य इस प्रकार हैं–

- *"मनुष्य भोक्ता नहीं कर्ता है। संपूर्ण माया मनुष्य की क्रीड़ा है।"*
- *"मनुष्य केवल परिस्थितियों को सुलझाता ही नहीं, वह परिस्थितियों का निर्माण भी करता है। वह प्राकृतिक व भौतिक परिस्थितियों में परिवर्तन करता है, सामाजिक स्थितियों का वह स्रष्टा है।"*
- *"मनुष्य से बड़ा है– केवल उसका अपना विश्वास और स्वयं उसका ही रचा हुआ विधान। अपने विश्वास और विधान के सम्मुख ही मनुष्य विवशता अनुभव करता है और स्वयं ही वह उसे बदल भी देता है।"*

2. अलौकिक आस्थाओं पर चोट

मानववादी विश्वास के अंतर्गत यशपाल ने अपनी काफी ऊर्जा उन अलौकिक विश्वासों को खंडित करने में लगाई है जो मानववादियों को खटकते हैं। मानववादी जगत की व्याख्या भौतिकवादी नज़रिये से करते हैं जिसके अनुसार चेतना की उत्पत्ति जड़ पदार्थ से होती है, न कि चेतना से जड़ पदार्थ की। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि ईश्वर व आत्मा जैसी चेतन सत्ताएँ खंडित हो जाती हैं और जगत ही अंतिम सत्ता बन जाता है।

भारत के नौ दर्शनों में से चार्वाक अथवा लोकायत एकमात्र दर्शन है जो भौतिकवाद को अपनाता है तथा सभी पारलौकिक विश्वासों को खंडित करता है। इसी दर्शन के प्रतिनिधि मारिश के माध्यम से यशपाल ने अलौकिक विश्वासों का खण्डन किया है। उसके कुछ प्रमुख कथन इस प्रकार हैं–

"जिस स्थूल प्रत्यक्ष जगत और शरीर का अनुभव सम्पूर्ण जन करता है, उसे भ्रम मानना और जिस ब्रह्म और जीवात्मा की कल्पना केवल ब्रह्मवादी ही करता है उसे सत्य मानना क्या युक्तियुक्त और तर्कसंगत है? देवि, यह जीवन ही सत्य है। यह संसार ही सत्य है। जो पाना है, इस जीवन में पाओ।" (परलोकवाद का खण्डन और इहलोकवाद की स्थापना)

"भाग्य का अर्थ है मनुष्य की विवशता और कर्मफल का अर्थ है कष्ट और विवशता के कारण का अज्ञान। भद्रे! इसके अतिरिक्त भाग्य और कर्मफल कुछ नहीं।" (भाग्यवाद का खंडन)

अध्याय
3

मैला आँचल

3.1 मैला आँचल का संवेदना पक्ष

मैला आँचल हिन्दी का प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है और इस कारण इसके कथ्य में प्राय: वे सारी विशेषताएँ मिलती हैं जो किसी भी आंचलिक उपन्यास में पाई जाती हैं। आंचलिक उपन्यास में जो परिवेश लिया जाता है, वह समय और स्थान में सीमित होता है किंतु उस सीमित समय और स्थान में जीवन के जितने पक्ष हो सकते हैं, उन पक्षों के जितने चेहरे हो सकते हैं, वे सब उसमें पूरे विस्तार के साथ विद्यमान होते हैं। मैला आँचल भी ऐसे ही कथ्य को धारण करता है।

भौगोलिक पक्ष

यद्यपि समग्रता के लिये आंचलिक उपन्यासकार को जीवन के सभी पक्षों की प्रस्तुति करनी होती है, लेकिन मूल रूप से भौगोलिक और सांस्कृतिक वर्णन इस उपन्यास में प्रमुख होते हैं। यह प्रमुखता इस रूप में नहीं होती है कि इन पक्षों का विस्तार सबसे अधिक हो बल्कि इस रूप में होती है कि यही दो पक्ष आंचलिक उपन्यास को 'आंचलिकता' प्रदान करते हैं। इस उपन्यास में इन दोनों बिंदुओं पर पर्याप्त ध्यान देते हुए रचनाकार ने जीवन के सारे पहलुओं को, चाहे वे सामाजिक हों राजनीतिक हों, या आर्थिक हों, यथोचित स्थान दिया है।

रेणु ने सबसे पहले अंचल का सामान्य भौगोलिक वर्णन किया है ताकि पाठक उस अंचल तक पहुँच सके जिसके सारे जीवन को वह आगे महसूस करने वाला है। उपन्यास की शुरुआत में ही वे भौगोलिक परिचय देते हैं –

"ऐसा ही एक गाँव है मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढ़ी कोशी को पार करके जाना होता है। xxxx तड़बन्ना के बाद ही एक बड़ा मैदान है जो नेपाल की तराई से शुरु होकर गंगा जी के किनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड़ जमीन! बंध्या धरती का विशाल अंचल। xxxx कोस-भर मैदान पार करने के बाद, पूरब की ओर काला जंगल दिखाई पड़ता है; वही है मेरीगंज कोठी।"

बाहरी भूगोल का वर्णन करने के बाद रचनाकार गाँव के भीतरी भूगोल पर दृष्टि डालता है ताकि अंचल की एक आंतरिक पहचान भी पाठक को हो सके। उपन्यासकार लिखता है-

"मेरीगंज एक बड़ा गाँव है, बारहो बरन के लोग रहते हैं। गाँव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गढ़ों में पानी जमा रहता है।"

भौगोलिक परिचय देने के बाद रेणु उस अँचल के समग्र जीवन का अंकन करना शुरु करते हैं। इसमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पक्ष अपने हर रूप-रंग में व्यक्त होते चलते हैं और धीरे-धीरे पाठक खुद को उस गाँव में ही महसूस करने लगता है।

सामाजिक जीवन

- **जाति व्यवस्था:** जाति व्यवस्था भारत के किसी भी सामान्य गाँव के सामाजिक जीवन की धुरी के रूप में काम करती है। मेरीगंज का पूरा समाज जाति के आधार पर वर्गीकृत है और जातीय किस्म के झगड़े होना वहाँ सामान्य सी बात है। जातियों के बीच का शक्ति संतुलन भी गाँव की सामाजिक संरचना निर्धारित करता है। उपन्यासकार उपन्यास के आरंभ में ही इस संरचना को स्पष्ट करते हुए कहता है –

  "अब गाँव में तीन प्रमुख दल हैं- कायस्थ, राजपूत और यादव। ब्राह्मण अभी भी तृतीय शक्ति हैं। गाँव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन्हीं तीनों दलों में बँटे हुए हैं।"

अध्याय
4

महाभोज

4.1 संवेदना पक्ष

हिन्दी साहित्य साठ के दशक के बाद आमतौर पर मोहभंग के कारण ऐसी अवस्था में था जहाँ बाहरी सामाजिक जीवन के स्थान पर व्यक्ति के आंतरिक जगत का मनोविश्लेषणवादी तथा अस्तित्ववादी विश्लेषण प्रमुख हो गया था। 1967 के बाद से भारतीय राजनीति में तेजी से स्थितियाँ बदलने लगीं। महाभोज में लेखिका ने भयावह होते हुए इसी यथार्थ को समझने का ईमानदार प्रयास किया है।

लेखिका का दृष्टिकोण

महाभोज के प्रतिपाद्य को समझने के लिये लेखिका के दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण उपन्यास की भूमिका तथा समर्पण के वक्तव्यों से स्पष्ट होता है। लेखिका की मान्यता है कि हमारा परिवेश ही हमारे व्यक्तित्व और नियति को निर्धारित करता है। लेखिका स्पष्ट कहती हैं कि इस परिवेश के प्रति किसी भी दायित्वशील व्यक्ति को जवाबदेही महसूस करनी चाहिये। वे उपन्यास की भूमिका में लिखती हैं–

"संभवत: इस उपन्यास की रचना के पीछे यही प्रश्न रहा हो। इसे मैं अपने व्यक्तित्व और नियति को निर्धारित करने वाले परिवेश के प्रति ऋणशोध के रूप में ही देखती हूँ।"

ऐसा नहीं है कि लेखिका व्यक्तित्व को त्याज्य मानती हैं। उनकी मान्यता है कि यदि हमारा परिवेश स्वस्थ हो तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत और आंतरिक पक्षों पर ध्यान देने का पूरा अधिकार है। किंतु, यदि परिवेश स्वस्थ नहीं है तो समाज का सदस्य होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति का प्राथमिक दायित्व बनता है कि वह पहले परिवेश के लिये चिंतित हो। भूमिका में उनका कथन है–

"जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अंतर्जगत में बने रहना या उसी का प्रकाशन करना क्या खुद ही अप्रासंगिक, हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगने लगता।"

'महाभोज' में रचनाकार ने अपने समय के तमाम अंधेरे को व्यक्त करने का प्रयास किया है। आज़ाद हिंदुस्तान में आज़ादी के सपनों की मौत कैसे हुई है, नई-नई शक्तियों ने देश को कैसे बाँटा है, नए नेतृत्व ने किस प्रकार लोकतंत्र का मखौल बनाया है, सामाजिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तनों को किस प्रकार रोका गया है तथा इन सारे अंधेरों के बावजूद किस प्रकार स्थितियों के समाधान की संभावना बची हुई है- इस संश्लिष्ट यथार्थ को रचना में चरित्रों व घटनाओं की परस्पर अंतर्क्रियाओं के माध्यम से उभारा गया है।

राजनीतिक विकृति

महाभोज की मूल समस्या राजनीतिक विकृति की है। भारत की स्वाधीनता के बाद लोकतंत्र स्थापित हुआ किंतु लोकतंत्र धीरे-धीरे कैसे भीड़तंत्र में बदलता गया, यह उपन्यास बार-बार इस प्रश्न को उठाता है। लोकतंत्र के आने के बाद भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि राजनीति सामाजिक जीवन की धुरी बन गई। किंतु, भारत में जिस दौर में लोकतंत्र का विकास हुआ, वह दौर आम भारतीय के लिये अशिक्षा व गरीबी का समय था। इस समय आम आदमी समानता, स्वतंत्रता, न्याय जैसे आधुनिक मूल्यों से अनभिज्ञ था। लोकतंत्र में किस प्रकार विवेकशील निर्णय लिये जाने चाहियें- वह इन बातों से बेखबर था। इसी स्थिति के कारण राजनीति में संवेदनहीन अवसरवाद पैदा हुआ, भ्रष्टाचार पनपने लगा और एक अविश्वसनीय किस्म का दिखावटी नेतृत्व विकसित होने लगा। इस रचना में राजनीति की संवेदनहीन अवसरवादिता को निम्न कथन से स्पष्ट किया गया है–

अध्याय
5

प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

'प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' संकलन अमृत राय द्वारा संपादित किया गया है जिसमें 1910 से 1936 ई. तक प्रेमचंद द्वारा लिखी गई प्रतिनिधि कहानियाँ शामिल हैं। इन कहानियों को निश्चित क्रम में पढ़ने से प्रेमचंद की संपूर्ण कहानी यात्रा की प्रामाणिक तस्वीर स्पष्ट होती है। शुरु की कहानियाँ साफ तौर पर द्विवेदीयुगीन आदर्शवाद पर आधारित हैं, जबकि अंतिम कहानियाँ उस बिन्दु को छूती हैं जहाँ उनका आदर्शवाद से मोहभंग हो गया था तथा वे चरम यथार्थवाद की ओर बढ़ने लगेथे।

प्रेमचंद की कहानियों के इस संकलन में कुछ कहानियाँ सार्वकालिक महत्त्व की हैं जबकि कुछ का महत्त्व उनकी विकास यात्रा को समझने की दृष्टि से ही है। सबसे पहले हम उनकी सभी कहानियों का परिचय प्राप्त करेंगे। यहाँ महत्त्वपूर्ण कहानियों पर विस्तार में चर्चा की जा रही है और गौण कहानियों का सिर्फ परिचयात्मक विवरण दिया जा रहा है।

5.1 बड़े घर की बेटी

इस संकलन की पहली महत्त्वपूर्ण कहानी 'बड़े घर की बेटी' है जो 1910 ई. में 'ज़माना' पत्रिका में प्रकाशित हुई।

कथासार व संवेदना

इस कहानी में बेनीमाधव सिंह नाम के जमींदार हैं, जिनके दो बेटे हैं- श्रीकंठ सिंह तथा लाल बिहारी सिंह। श्रीकंठ सिंह का विवाह एक बड़े घर की बेटी आनंदी से होता है जो बहुत कम समय में अपनी नयी परिस्थितियों के अनुसार ढल जाती है। एक बार घी के अपव्यय को लेकर लाल बिहारी सिंह आनंदी को डाँटता है और बात आगे बढ़ने पर अपना खड़ाऊँ उसकी ओर फेंकता है। आनंदी इस अपमान को नहीं सह पाती। श्रीकंठ सिंह की गहरी आस्था संयुक्त परिवार व्यवस्था में है। उसने कई परिवारों को टूटने से बचाया भी है किन्तु अपनी पत्नी का यह अपमान वह बर्दाश्त नहीं कर पाता और परिवार छोड़ने की घोषणा कर देता है। अंततः आनंदी ही परिवार को टूटने से बचाती है और उसकी इस महानता को देखकर बेनीमाधव सिंह कह उठते हैं- *"बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।"* स्पष्ट है कि यह कहानी संयुक्त परिवार तथा हृदय परिवर्तन जैसे पारंपरिक भारतीय मूल्यों पर आधारित है जिन्हें आगे चलकर महात्मा गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन में अत्यधिक महत्त्व दिया।

शिल्प

जहाँ तक शिल्प का प्रश्न है, इस कहानी का कथानक बेहद सीधा, सरल और रैखिक है। इसकी गति में वक्रता या तिरछापन नज़र नहीं आता। ध्यान से देखें तो इस कहानी में कुछ बिन्दुओं पर सघन नाटकीय तनाव की सृष्टि की जा सकती थी किन्तु प्रेमचंद की कहानी-कला का शुरुआती स्तर होने के कारण इसका शिल्प उतना सधा हुआ नहीं है जितना उनकी बाद की कहानियों में नज़र आता है। चरित्र योजना भी मोटे तौर पर पारंपरिक है। यद्यपि श्रीकंठ, आनंदी और लाल बिहारी तीनों चरित्रों में मानसिक द्वंद्व दिखाया गया है लेकिन चरित्र अभी भी पारंपरिक मान्यताओं के प्रतिनिधि ही नज़र आते हैं, उनमें स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सका है। कहानी की भाषा सरल और सहज है। मनोविज्ञान का प्रयोग प्रेमचंद ने विशेष तौर पर किया है; मुख्यतः नारियों के सामूहिक मनोविज्ञान के संबंध में। उदाहरण के लिये, कहानी का एक वाक्य है- *"आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं।"* कहीं-कहीं सूत्र वाक्यों का सुंदर प्रयोग है, जैसे- *"सुंदर संतान को कदाचित् माता-पिता भी अधिक चाहते हैं।"* अपनी किस्सागो शैली के कारण प्रेमचंद बीच-बीच में कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ करते हुए चलते हैं जैसे- *"मन का मैल धोने के लिये नयन जल से उपयुक्त कोई वस्तु नहीं है।"* ऐसे स्थानों पर कहीं-कहीं उनकी उपदेशात्मक प्रवृत्ति भी हावी होने लगती है। हास्य-व्यंग्य का सुंदर प्रयोग भी इस कहानी की विशेषता है। उदाहरणार्थ-जब श्रीकण्ठ और उनके पिता में झगड़े की संभावना हुई तो गाँव के लोग झगड़ा

अध्याय
6

एक दुनिया : समानांतर

6.1 परिचय

'एक दुनिया: समानांतर' नई कहानियों का प्रतिनिधि संकलन है जिसका संपादन उसी दौर के प्रसिद्ध कहानीकार राजेन्द्र यादव ने किया है। इस संकलन की अधिकांश कहानियाँ शहरी मध्यवर्ग के 'भोगे हुए यथार्थ' पर आधारित हैं जबकि कुछ कहानियाँ ग्रामीण जीवन और वंचित वर्गों के जीवन संघर्षों को भी छूती हैं।

सबसे पहले, हम इस संकलन की प्रमुख कहानियों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

6.2 खोई हुई दिशायें (कमलेश्वर)

'खोई हुई दिशायें' कमलेश्वर की सबसे प्रसिद्ध कहानियों में शामिल है, जिसे 'एक दुनिया: समानांतर' में संकलित किया गया है। यह इस संकलन की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है। वस्तुत: इसकी संवेदना और शिल्प नयी कहानी का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हैं।

कथासार

यह कहानी चन्दर नाम के एक व्यक्ति की है जो कुछ वर्ष पहले इलाहाबाद से दिल्ली आकर बसा है और बड़े शहर में व्याप्त अकेलेपन तथा संबंधहीनता की वजह से परेशान है। कहानी में घटनाएँ नहीं हैं, केवल एक शाम से रात तक की स्थितियों का वर्णन है। शुरुआत में वह कनॉट प्लेस में खड़ा है जहाँ से हज़ारों लोग गुज़रते हैं पर उसे कोई नहीं पहचानता। तभी आनन्द नामक उसका एक परिचित आता है जिसकी सारी बातें नकली और सतही हैं। आनंद संबंधों का लाभ उठाने में यकीन रखता है किन्तु आत्मीय संबंध बनाना उसके लिये संभव नहीं। फिर, चन्दर को याद आता है कि उसने बहुत लंबे समय से खुद से भी बात नहीं की है। यह सोचकर उसका अकेलापन और बढ़ जाता है। वह कॉफी हाउस जाता है जहाँ एक व्यक्ति की नज़रों में उसे पहचान का आश्वासन मिलता है किंतु एक ही संवाद में स्पष्ट हो जाता है कि यह एक गलतफहमी थी। पहचान की भूख उसे अपनी पुरानी प्रेमिका इन्द्रा के घर जाने के लिये व्यग्र करती है। वह जिस बस में जाता है उसका परिचालक उसे पहचानने का भाव दिखाता है जिससे चन्दर को गहरा सुकून मिलता है। किंतु, अगले ही क्षण टिकट के मूल्य को लेकर वह परिचालक इस तरह व्यवहार करता है कि जैसे चन्दर पहली बार उसकी बस में आया हो। वह इन्द्रा के पास पहुँचता है जहाँ वह तीन महीने पहले भी आया था। तीन महीने पहले इन्द्रा को अच्छी तरह याद था कि चन्दर को दूध से चिढ़ है, कॉफी उसे धुआँ पीने की तरह लगती है और चाय में एक चम्मच चीनी ही लेता है क्योंकि दूसरे चम्मच से उसका गला खराब हो जाता है। आज उसे इन्द्रा के व्यवहार में भी मेहमान-नवाज़ी की बू आयी और जैसे ही इन्द्रा ने पूछा- *'चीनी कितनी दूँ'*, तभी एक झटके में सब कुछ बिखर गया। अंत में वह अपने घर पहुँचकर अपनी पत्नी निर्मला के प्रेम में राहत महसूस करता है। उसे लगता है कि कम से कम वह तो उसे पहचानती है। किंतु, अकेलेपन का भय इतना गहरा है कि रात को सोते हुए अचानक वह निर्मला को झकझोर कर उठा देता है और पूछता है- *'मुझे पहचानती हो, निर्मला'*। निर्मला आश्चर्य भरे स्वर में पूछती है- 'क्या हुआ'। इसी बिंदु पर कहानी समाप्त होती है।

संवेदना पक्ष

'खोयी हुई दिशायें' नव-लेखन के दौर की कहानी है जब साहित्य के केंद्र में शहरी मध्यवर्ग आने लगा था। इस समय अस्तित्ववाद व मनोविश्लेषणवाद जैसी विचारधाराएँ व्यक्ति की नियति तथा उसके मनोजगत के विश्लेषण पर बल दे रही

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456